Acquired language and Learning language

स्व-भाषा या अधिकृत भाषा तथा सीखी गयी भाषा

Ans. स्व-भाषा या अधिकृत भाषा : मातृभाषा कहलाती है। बालक जन्म के बाद अपने माता-पिता परिवार, तथा परिजनों से जिस भाषा को सीखता है, अर्जित करता है और परिजनों के साथ व्यवहार में उसका प्रयोग करता है, वही उसकी मातृभाषा होती है। भिन्न-भिन्न क्षेत्रों की मातृभाषा अलग-अलग हो सकती है। मातृभाषा प्रायः क्षेत्रीय बोली का रूप माना जाता है। यह प्रथम भाषा हो भी सकती है और नहीं भी। समाज के परिनिष्ठित व्यक्तियों द्वारा व्यवहार में लायी जानेवाली भाषा जिसका प्रयोग शिक्षा-दीक्षा के कार्य में, कार्यालय में, प्रशासनिक कार्य में, तथा प्रदेश की अन्य कार्यों में की जाती है, प्रथम भाषा या भाषा-1 कहलाती है। अतः, प्रथम भाषा या भाषा, ही प्रत्येक प्रदेश की मातृभाषा मानी जाती है।

कुछ समय पहले व्यक्ति अपना सारा कार्य-व्यापार अपने सीमित क्षेत्रों ही करते थे ~~करते थे~~ जिससे उन्हें अन्य भाषा को सीखने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। कुछ विशिष्ट लोग ही ज्ञान वृद्धि के लिए मातृभाषा के इतर अन्य भाषा को सीखते थे। अन्य भाषा का ज्ञान व्यक्ति की सांस्कृतिक सम्पन्नता का सूचक माना जाता था।

आज की परिस्थियाँ कुछ भिन्न है। मातृभाषा के इतर अन्य भाषा का ज्ञान प्रगतिशील व्यक्ति के जीवन की पहचान बन गई है। आज का युग तकनीकी और वैज्ञानिक युग है। इस युग में कई ऐसे संसाधन उपलब्ध है जो व्यक्ति की आवश्यक आवश्यकता का स्थान ले ली है। इन आवश्यक आवश्यताओं की पूर्ति के लिए तथा अपनी ज्ञान क्षेत्र की वृद्धि के लिए अपने

Scanned with CamScanner

घर, परिवार, प्रदेश की सीमाओं को लाँघकर विदेशों में प्रवेश कर रहे हैं। ऐसे में अन्य भाषा का ज्ञान आवश्यक जान पड़ता है। अतः, आज अन्य भाषा सीखने-सीखाने के आयाम में विस्तार आ गया है। इस प्रकार, मातृभाषा के इतर जो अन्य भाषा सीखी जाती है उसे प्राप्त की हुई भाषा या द्वितीय भाषा कहीं जाती है। यह भाषा देशी या विदेशी भी हो सकती है। उदाहरण के तौर पर हिन्दी भाषा-भाषी छात्र के लिए अंग्रेजी, पंजाबी, रूसी, जर्मनी, संस्कृत, संथाली, द्वितीय भाषा मानी जाती है।

मातृभाषा के इतर अन्य भाषा की जानकारी आज कई कारणों से आवश्यक जान पड़ता है। वर्तमान में संचार संसाधनों ने लोगों के बीच की दूरी को कम कर दिया है। वे लोगों को एक-दूसरे के विचार धाराओं से अवगत कराने में सक्षम बना दिया है। पूर्व में इतनी सूचना सुविधाएँ नहीं थी तथा व्यक्ति अपने आपको असहाय पंगु महसूस करते थे। आज व्यक्ति किसी एक सीमा में बंधकर नहीं रहना चाहता है। वह अपनी पहचान देश में ही नहीं, विदेश में भी बनाना चाहता है। कहने का तात्पर्य यह है कि व्यक्ति किसी एक सीमा में बंधकर नहीं रहना चाहता है। वह अपनी क्षमताओं को पूर्ण आयाम देना चाहता है। ऐसी स्थिति में मातृभाषा के इतर अन्य भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है। मातृभाषा के साथ-साथ अन्य भाषा का ज्ञान रहने पर व्यक्ति अन्य भाषा-भाषी व्यक्तियों से संबंध स्थापित करने में सरलता से सक्षम हो सकते हैं। अपनी बात उन तक आसानी से पहुँचा सकते हैं। दूसरी ओर व्यक्ति के पूर्ण विकास के लिए भी अन्य भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है।

Scanned with CamScanner